"आप अनन्त काल तक कहां रहेंगे?"

I. पाप ज़्या है ?

_____ रोमियों 14:23

_____ 1 यूहन्ना 3:4

_____ 1 यूहन्ना 5:17

_____ याकूब 4:17

II. ज़्या आप पापी हैं ?

1. इसलिए कि _____ पाप किया है। रोमियों 3:23
2. _____ धर्मी नहीं, एक भी नहीं। रोमियों 3:10
3. यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो _____ _____ _____ और हम में _____ नहीं। 1 यूहन्ना 1:8

III. पापी व्यज़्ति और उद्धार पाया हुआ व्यज़्ति कहां रहेंगे ?

पापी	उद्धार पाया हुआ
मज़ी 25:41	मज़ी 25:46
प्रकाशित. 14:11	प्रकाशित. 14:13
मज़ी 25:30	प्रकाशित. 21:4
रोमियों 2:9	मज़ी 25:23
यूहन्ना 8:21	यूहन्ना 14:3
मज़ी 10:28	1 पतरस 1:3, 4

IV. आपका भविष्य इस बात से तय होगा कि आप ज़्या करते हैं या नहीं ?

रोमियों 2:8	मज़ी 7:21
2 थिस्सलु. 1:8	इब्रानियों 5:9

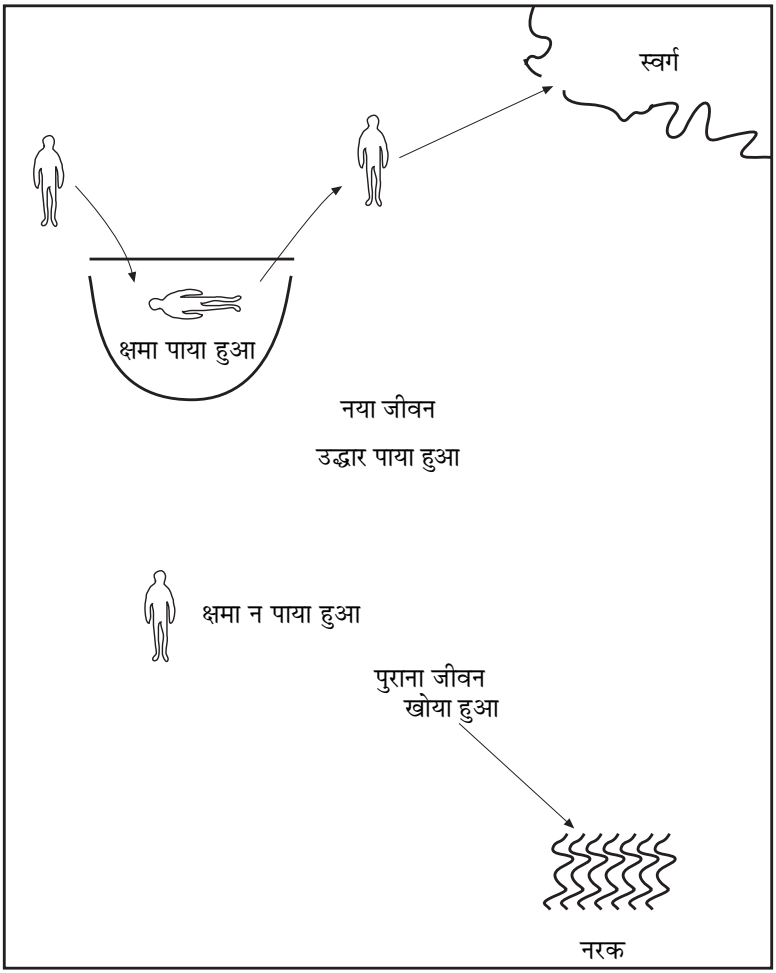
स्वर्ग
क्षमा पाया हुआ
नया जीवन
उद्धार पाया हुआ
क्षमा न पाया हुआ
पुराना जीवन
खोया हुआ
नरक

अध्ययन शीट प्रस्तुत करना:

''आप अनन्तकाल तक कहां रहेंगे?''

इस अध्ययन शीट ''आप अनन्तकाल तक कहां रहेंगे?'' का इस्तेमाल किसी भी शीट के बाद किया जा सकता है। शायद इस शीट को ''उद्धार'' वाली अध्ययन शीट (पाठ 4) से पहले प्रस्तुत न करना अधिक ठीक रहेगा। सिखाने वाले को चाहिए कि वह इस शीट का इस्तेमाल सीखने वाले को सुसमाचार की आज्ञा मानने के विचार करने की कोशिश के समय करे।

उद्देश्य

''अनन्तकाल'' शीट का उद्देश्य आज्ञा मानने और न मानने के परिणाम बताना तथा सीखने वाले को यह अहसास दिलाने में सहायता करना है कि यीशु को दिए गए उसके उज़र से उसका अनन्तकाल कैसे प्रभावित होगा।

संक्षेप में पाठ

इस पाठ में दिखाया गया है कि पाप ज़्या है और यह कि सबने पाप किया है। क्षमा अर्थात उद्धार पाए हुओं के भविष्य की क्षमा न पाने वाले पापी के भविष्य में अन्तर दिखाया गया है। हमें दण्ड या पुरस्कार मिलता है या नहीं यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमने सुसमाचार को किस प्रकार माना या नहीं।

परिचय

पिछले पाठों में हमने पाप तथा मृत्यु के स्रोत, मनुष्य को पाप से बचाने की परमेश्वर की योजना और उद्धार के मार्ग यीशु के बारे में सीखा था। यदि हम यीशु की आज्ञा न मानना चुनते हैं तो हमारा अनन्तकाल कहां बीतेगा? (प्रेरितों 3:23 पढ़ें)। हमारे लिए यीशु की इच्छा को पूरा करना सबसे महत्वपूर्ण बात है। हमारे अनन्तकाल का भविष्य इसी पर निर्भर है। पाप से हमारा भविष्य प्रभावित होता है। यदि हमने पाप न किया होता, तो हमें दण्ड की चिंता करने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी।

I. पाप ज़्या है?

हम में से अधिक लोगों को इस बात का अहसास ही नहीं होता कि हमने कब पाप

किया ज़्योंकि हमें पता ही नहीं है कि पाप होता ज़्या है। नये नियम में ''पाप'' शज़्द यूनानी भाषा के शज़्द हमरशिया (hamartia) से लिया गया है जिसका अर्थ है ''निशाने से चूकना, कर्ज़व्य पूरा न कर पाना।'' बाइबल में पाप का उल्लेख बहुत बार मिलता है ज़्योंकि मनुष्य के इतिहास में पाप की महत्वपूर्ण भूमिका है।

परमेश्वर ने मापदण्ड के रूप में हमें जीने के लिए अपना आप, अपना स्वभाव दिया है (1 पतरस 1:14-16)। परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप पर बनाया है (उत्पज़ि 1:26, 27)। जब हम पाप करते हैं, तो उस स्वभाव का उल्लंघन कर रहे होते हैं जो परमेश्वर ने हमें दिया है। हम अपने लिए परमेश्वर के नमूने को पूरा करने में नाकाम रहते हैं। जब हम पाप करते हैं, तो हम उस स्वभाव को बिगाड़ रहे होते हैं जो परमेश्वर ने हमें दिया है।

बाइबल हमें इस बारे में कि पाप ज़्या है चार बार फिर बताती है। पहला वाज़्य जिस पर हम विचार करेंगे, जो हमें यह समझने में सहायता करता है कि पाप ज़्या है, पौलुस द्वारा लिखा गया था। पौलुस पाप को ज़्या कहता है? [रोमियों 14:23 पढ़ें।] पाप *ज़्या* है? [रिज़्त स्थान में ''जो कुछ विश्वास से नहीं'' भरें।] पाप वह काम करना है जो हमें लगता है कि सही नहीं है। जब हम परमेश्वर के वचन की बात मानते हैं, तो हमारा वह काम इस विश्वास से हो सकता है कि जो हम कर रहे हैं वह सही है, ज़्योंकि विश्वास परमेश्वर के वचन अर्थात परमेश्वर के संदेश सुनने से आता है (रोमियों 10:17)। यदि हम जानते हैं कि परमेश्वर का वचन ज़्या कहता है तो हम बिना संदेह किए कि वह काम सही है या नहीं उसे कर सकते हैं। परन्तु हो सकता है कि कुछ बातों का हमें पता न चले कि हम सही हैं या गलत ज़्योंकि हमें यह समझ नहीं आता कि परमेश्वर ज़्या कहता है। जब हमें लगता है कि कोई चीज़ गलत है या हमें उसके सही होने पर संदेह होता है, परन्तु फिर भी कर देते हैं तो वह पाप होता है। जो विश्वास से नहीं वह पाप है। इस संदेह में कि यह कार्य करना चाहिए या नहीं, काम करने वाला व्यज़्ति पाप कर रहा है।

दूसरा वाज़्य जिस पर हम ध्यान दें, वह प्रेरित यूहन्ना ने लिखा था। यूहन्ना ने पाप किसे कहा? [1 यूहन्ना 3:4 पढ़ें।] पाप *ज़्या* है? [रिज़्त स्थान में ''व्यवस्था का विरोध'' भरें।] ''विरोध'' का अर्थ है ''व्यवस्था द्वारा ठहराई हुई सीमाओं से बाहर जाना, व्यवस्था की अनुमति के बिना काम करना।'' निश्चय ही यूहन्ना पुराने नियम में पाई जाने वाली व्यवस्था के बारे में *नहीं* लिख रहा होगा ज़्योंकि मसीही व्यज़्ति पुरानी व्यवस्था के अधीन नहीं है (गलतियों 3:24, 25)। यूहन्ना अवश्य ही ''मसीह की व्यवस्था'' (1 कुरिन्थियों 9:21), अर्थात यीशु द्वारा सिखाए सिद्धांतों को व्यवस्था कह रहा होगा। जो व्यज़्ति अपने आपको यीशु की शिक्षा के अनुसार नहीं चलाता वह पाप कर रहा है और इसलिए परमेश्वर की दृष्टि में एक पापी माना जाता है। पाप व्यवस्था का विरोध करना है।

तीसरा वाज़्य जिस पर हम विचार करेंगे वह भी यूहन्ना द्वारा लिखा गया था। यूहन्ना ज़्या कहता है कि पाप ज़्या है? [1 यूहन्ना 5:17 पढ़ें।] पाप *ज़्या* है? [रिज़्त स्थान में ''सब प्रकार का अधर्म'' भरें।] अज़्सर हम अधर्म के *कुछ* कामों को पाप मानते हैं, परन्तु *दूसरे* कामों को जो हमें लगता है कि बहुत गंभीर नहीं हैं, हम पाप नहीं मानते। अधर्म का कोई

काम अधिक गंभीर लगने वाला हो या कम गंभीर, परमेश्वर की दृष्टि में पाप ही है। सब प्रकार का अधर्म पाप है। चौथा वाक्य जो हम पढ़ेंगे याकूब द्वारा लिखा गया था। याकूब क्या कहता है कि पाप क्या है? [याकूब 4:17 पढ़ें।] पाप *क्या* है? [रिक्त स्थान में ''भलाई करना जानना परन्तु करना नहीं'' भरें।]

पाप से सम्बन्धित पहले तीन वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि गलत ढंग से काम करना पाप है। वे कार्य गलत इसलिए हैं क्योंकि या तो हम अपने ही मापदण्डों को तोड़ रहे हैं या परमेश्वर के मापदण्डों को। इसके अलावा, याकूब कहता है कि भलाई करना जानने के बावजूद उसे न करना पाप ही है। यदि हम किसी ज़रूरतमंद की सहायता करना जानते हैं, किसी को परमेश्वर की इच्छा बता सकते हैं, कोई ऐसी बात कर सकते हैं जिससे उसे सहायता मिले, परन्तु करते नहीं, तो हम पाप कर रहे होते हैं। पाप वही है जिसमें हम जो भलाई करना जानते हैं, वह नहीं करते।

इस भाग में हमने क्या सीखा? हमने सीखा कि जब हम कोई ऐसा काम करते हैं जिसके सही होने पर हमें संदेह होता है, कोई ऐसा काम करते हैं जिसकी अनुमति व्यवस्था में नहीं दी गई, कोई अधर्म का काम करते हैं और वह भलाई नहीं कर पाते जो करना जानते हैं, तो हम पाप कर रहे होते हैं।

II. क्या आप पापी हैं?

पाप के बारे में हमने जो कुछ सीखा है उसके आधार पर, आप अपने आपको क्या कहेंगे। क्या आप *हमेशा* वही करते हैं जो आप जानते हैं कि सही होगा और *हमेशा* उससे दूर रहते हैं जिसमें आपको संदेह होता है? क्या आप *हमेशा* यीशु द्वारा सिखाए सिद्धांतों अर्थात मसीह की व्यवस्था में बने रहते हैं? क्या आप *हमेशा* अधर्म के किसी काम से दूर रहते हैं? क्या आपने हमेशा वही किया है जो आपको लगता हो कि आपको करना चाहिए? यदि आप इन सबके उत्तर में ''हां'' कह सकते हैं, तो आपने कभी पाप नहीं किया। आप किसी ऐसे इन्सान को जानते हैं जो ईमानदारी से इन सबका उत्तर ''हां'' में दे सकता हो?

1. कितने लोग पापी हैं? [रोमियों 3:23 पढ़ें।] *कितने* पापी हैं? [रिक्त स्थान में ''सब'' भरें।] ध्यान दें कि जब हम पाप करते हैं, तो परमेश्वर की महिमा से रह जाते हैं अर्थात उसके पवित्र स्वभाव में बने नहीं रहते। याद रखें कि परमेश्वर ने हमें जीने के मापदण्ड के रूप में अपना आप दिया है। परमेश्वर झूठ नहीं बोलता, इसलिए हम भी झूठ न बोलें। परमेश्वर उन लोगों का भी भला करता है जो उसे भला नहीं मानते, इसलिए हमें भी उन लोगों का भला करना चाहिए जो हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं (मत्ती 5:44-48)। हमें परमेश्वर के चरित्र का अनुसरण करना चाहिए। जब हम ऐसा नहीं कर पाते, तो हम पाप करते हैं। कोई भी मनुष्य अपने पवित्र सृष्टिकर्ता के पवित्र स्वभाव में बना नहीं रह पाया।

2. यदि सब लोग पापी हैं, तो क्या कोई धर्मी भी है? [रोमियों 3:10 पढ़ें।] *कितने लोग* धर्मी हैं? [रिक्त स्थान में ''कोई'' भरें।] केवल परमेश्वर ही धर्मी है। हम में से कोई भी धर्मी नहीं।

3. यदि हम कहते हैं कि हम धर्मी हैं और हमने कभी पाप नहीं किया, तो परमेश्वर हमारे बारे में ज़्या कहता है ? [1 यूहन्ना 1:8 पढ़ें।] हमारे बारे में *ज़्या* कहा गया है ? [रिज़्त स्थान में ''अपने आपको धोखा देते हैं'' और ''सत्य'' भरें।] यदि हम कहते हैं कि हमने कोई पाप नहीं किया, तो हम अपने आपसे ईमानदारी नहीं कर रहे। हम सबने पाप किया है। परमेश्वर साफ़ बताता है कि हमने पाप किया है (रोमियों 3:23)। जो कोई यह कहता है कि उसने पाप *नहीं* किया वह परमेश्वर को झूठा ठहराता है (1 यूहन्ना 1:10) और किसी भी ढंग से अपने पापी होने की स्थिति को बदल नहीं रहा, बल्कि अपने आपको धोखा दे रहा है। उसे सच्चाई दिखाई नहीं दे रही, इसलिए उसमें सच्चाई है ही नहीं।

आपको यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आपने पाप *नहीं* किया, या किया है ? जब मैं पाप के विषय में परमेश्वर के मापदण्ड का विचार करता हूं तो मुझे इस तथ्य का सामना करना ही पड़ेगा कि मैं एक पापी हूं ? ज़्या आप मानते हैं कि आपने पाप किया है ?

हमने इस भाग में ज़्या सीखा ? हमने सीखा कि हम सब पापी हैं। हम सब ने परमेश्वर के मापदण्डों को तोड़ा है और किसी भी तरह उसके जैसे नहीं रहे हैं।

III. आपका भाग्य

यह एक *तथ्य* है कि सब ने पाप किया। संसार में कोई भी ऐसा नहीं है जो पापी न हो। या तो हम क्षमा पाए हुए अर्थात उद्धार पाए हुए पापी हैं या क्षमा रहित पापी। आप ज़्या हैं, क्षमा पाए हुए पापी या क्षमा रहित ? यदि आपको क्षमा नहीं मिली तो आप अनन्तकाल तक कहां रहेंगे, और यदि आपका उद्धार हो गया तो आप कहां रहेंगे ?

बाईं ओर के लोगों से यीशु ज़्या कहेगा ? [मत्ती 25:41 पढ़ें।] वह कहेगा कि *किसमें* चले जाओ ? [रिज़्त स्थान में ''अनन्त आग'' भरें।] वह आग कितनी देर तक जलती रहेगी ? स्पष्ट है कि वह आग कभी नहीं बुझेगी (मरकुस 9:48)। यदि वह आग कभी नहीं बुझेगी, तो दण्ड तो हमेशा तक रहने वाला होना चाहिए। यदि दण्ड जारी नहीं रहता तो आग जलती रहेगी ? आग और दण्ड दोनों ''अनन्त'' हैं (मत्ती 25:41, 46)।

दण्ड पाए हुओं को मिलने वाली ''अनन्त आग'' और ''अनन्त दण्ड'' के विपरीत उद्धार पाए हुओं को ज़्या मिलेगा ? [मत्ती 25:46 पढ़ें।] यीशु *ज़्या* कहता है कि दाईं और वालों को मिलेगा ? [रिज़्त स्थान में ''अनन्त जीवन'' भरें।] धर्मियों के लिए *जीवन* वैसे ही अनन्त और सदा तक रहने वाला है जैसे अधर्मियों के लिए *आग।* आपको अनन्त आग मिलेगी या अनन्त जीवन ?

दुष्ट लोग उस अनन्त आग में ज़्या कर रहे होंगे ? [प्रकाशित. 14:11 पढ़ें।] उनकी पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और उन्हें पीड़ा से *ज़्या नहीं मिलेगा ?* [रिज़्त स्थान में ''कोई चैन नहीं'' भरें।] यह पीड़ा खत्म नहीं होगी। आग में रहने वाले लोगों को आग के असर से बिल्कुल चैन नहीं मिलेगा। ज़्या यह आग *वास्तविक* होगी ? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न हो सकता है, परन्तु हम इसका स्पष्ट उज़र नहीं दे सकते। परन्तु यदि यह आग वास्तविक आग नहीं है, तो कम से कम ''आग'' शज़्द से हमें यह समझने में सहायता

मिलती है कि यदि हम आग में होंगे तो हमें भयंकर पीड़ा सहनी पड़ेगी।

क्षमा न पाने वालों को मिलने वाले दण्ड के विपरीत, उद्धार पाए हुए ज़्या कर रहे होंगे? [प्रकाशित. 14:13 पढ़ें।] उन्हें *ज़्या* मिलेगा? [रिज़्त स्थान में ''विश्राम'' भरें।] ध्यान दें कि *विश्राम* पाने वाले वही लोग हैं जो ''प्रभु में'' हैं। प्रभु में कौन है? ''उद्धार'' शीट से हमने सीखा था कि हम प्रभु में अर्थात यीशु में बपतिस्मा लेने के बाद आते हैं (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)। [*पिछली ओर* चित्र बनाएं और फिर चर्चा करें कि मसीह में कैसे आते हैं। उद्धार पाए हुओं के भविष्य के साथ जो कि स्वर्ग है, खोए हुओं को भविष्य अर्थात नरक में अन्तर करें देखें पृष्ठ 180।]

जिन पापियों को क्षमा नहीं मिली है उन्हें दण्ड से आराम नहीं मिलेगा? यीशु कैसे कहता है कि वे ज़्या कर रहे होंगे? [मत्ती 25:30 पढ़ें।] वे *ज़्या* कर रहे होंगे? [रिज़्त स्थान में ''रो रहे, दांत पीस रहे'' भरें।] मेरे एक मित्र ने एक ट्रक दुर्घटना के बारे में बताया जो उसने देखी थी। देखते ही देखते ट्रक आग की लपटों में घिर गया था। उसने ड्राइवर को आग की पीड़ा से बचने के लिए दरवाजा खोलने की इच्छा करते हुए पीड़ा से अपने दांत पीसते देखा था। अनन्त आग का दण्ड पाने वालों को रोना और दांत पीसने पड़ेंगे।

इसके विपरीत, उद्धार पाए हुए, बेशक इस जीवन में उन पर बहुत से कठिन समय आएं, परन्तु उनका आने वाला जीवन बिल्कुल अलग होगा। उनका जीवन कैसा होगा? [प्रकाशित. 21:4 पढ़ें।] उन्हें दोबारा *ज़्या* नहीं लगेगा? [रिज़्त स्थान में ''न शोक, न विलाप'' भरें।] पिछले समय की दुखी करने वाली सब बातें खत्म हो जाएंगी। उन्हें दोबारा कभी शोकित होना या रोना नहीं पड़ेगा।

जिस पापी के पाप क्षमा नहीं होंगे उसे दण्ड सहते हुए कोई आनन्द नहीं आएगा। फिर उसे ज़्या मिलेगा? [रोमियों 2:9 पढ़ें।] उसे *ज़्या* मिलेगा? [रिज़्त स्थान में ''ज़्लेश और संकट'' भरें।] इन दो शब्दों से संकेत मिलता है कि पापी व्यज़्ति को न केवल बाहरी पीड़ा मिलेगी बल्कि गहरा अंदरूनी शोक भी होगा।

ऐसे भयानक कष्ट के बजाय, उद्धार पाए हुए पापी को आशीष मिलेगी। उद्धार पाए हुए पापी अपना पुरस्कार पाकर ज़्या करेगा? [मत्ती 25:23 पढ़ें।] वे *किसमें* समभागी होंगे [रिज़्त स्थान में ''आनन्द'' भरें।] धर्मी व्यज़्ति का प्रतिफल अनन्त आनन्द होगा जिसमें कोई दुख या शोक न होगा।

यीशु ने स्वर्ग में पिता के साथ रहने के लिए, (2 कुरिन्थियों 4:18) परमेश्वर के अनन्त आत्मिक निवास में पाप, शोक और मृत्यु के इस संसार को छोड़ दिया (यूहन्ना 20:17)। ज़्या वह पापी जिससे क्षमा नहीं मिली कभी यीशु के साथ रह पाएगा? [यूहन्ना 8:21 पढ़ें।] वह *ज़्या* नहीं कर पाएगा [रिज़्त स्थान में ''मसीह के पास नहीं जा सकता'' भरें।]

ज़्या उद्धार पाया हुआ व्यज़्ति भी नहीं जा पाएगा? [यूहन्ना 14:3 पढ़ें।] वह *किसके साथ* रहेगा? [रिज़्त स्थान में ''मसीह के साथ'' भरें।] इस तथ्य का कि जो व्यज़्ति अपने पापों में मरता है कभी यीशु के पास नहीं जा सकता अर्थ यह है कि यदि उसे अपने पापों से क्षमा मिल गई थी तो वह यीशु के साथ रह सकता है। ऐसा वाज़्य व्यर्थ है यदि उद्धार पाए हुए

को यीशु के साथ रहने को न मिले ज़्योंकि वे यीशु के अनन्त घर से अलग अनन्त पृथ्वी पर ही रहेंगे। उद्धार पाए हुए तो यीशु के साथ ही रहेंगे (यूहन्ना 12:26)

दुष्ट लोगों का अनन्तनिवास कहां होगा? [मज़ी 10:28पढ़ें।] वे *कहां* होंगे? [रिज़्त स्थान में ''नरक'' भरें।] यहां ''नाश'' शज़्द का अर्थ समाप्त होना नहीं है जैसा कि कुछ लोग गलत शिक्षा देते हैं, बल्कि इसका अर्थ *शरीर का विनाश* है जिसका संकेत मज़ी 9:17 में प्रयुज़्त इसी यूनानी शज़्द से मिलता है। मश्कें फट जाएंगी अर्थात नष्ट हो जाएंगी। नरक सर्वनाश करने वाली नहीं बल्कि वहां जाने वालों के अनन्तकाल तक नाश होने की जगह है। (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। क्षमा न पाए हुए पापी का भविष्य अनन्त दण्ड है।

उद्धार पाया हुआ व्यज़्ति नरक में होने के बजाय, हमेशा तक कहां रहेगा? [1 पतरस 1:3, 4 पढ़ें।] उद्धार पाए हुओं के लिए *ज़्या* सुरक्षित रखा गया है? [रिज़्त स्थान में ''स्वर्ग'' भर लें।] उद्धार पाए हुए सभी लोग स्वर्ग में यीशु के साथ रहेंगे।

पापी को मिलने वाले दण्ड पर फिर से ध्यान दें। वह यीशु के साथ नहीं रह सकता, बल्कि उसे ज़्लेश और कष्ट में रहना होगा जहां उसे अनन्तकाल की आग के कारण रोने और दांत पीसने से चैन नहीं मिलेगा।

इस भविष्य के विपरीत, उद्धार पाए हुए पर ध्यान दें। उद्धार पाया हुआ व्यज़्ति स्वर्ग में यीशु के साथ रहेगा जहां उसे आनन्द ही आनन्द होगा और कोई ज़्लेश या रोना नहीं होगा। उसे उसके परिश्रमों से आराम मिलेगा और वह परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन का आनन्द लेगा।

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है? हमने सीखा है कि उद्धार पाए हुए और पापी के अनन्त भविष्य में बहुत ही अंतर होगा। उद्धार पाया हुआ व्यज़्ति सदा के लिए स्वर्ग का आनन्द लेगा जबकि पापी व्यज़्ति को अनन्त आग से उत्पन्न हुए संताप और कष्ट को झेलना पड़ेगा।

IV. भविष्य कैसे तय होता है

ज़्या हम अपना भविष्य तय कर सकते हैं? दण्ड किसे मिलेगा? [रोमियों 2:8 पढ़ें।] *किन्हें* दण्ड दिया जाएगा? [रिज़्त स्थान में ''सच्चाई को नहीं मानते'' भरें।] ज़्या यह बाइबल की शिक्षा के साथ मेल खाती है? [2 थिस्सलु. 1:8 पढ़ें।] दण्ड *किसे* दिया जाएगा? [रिज़्त स्थान में ''आज्ञा नहीं मानते'' भरें।]

यदि इन्हें दण्ड मिलेगा तो आपको ज़्या लगता है कि पुरस्कार कौन पाएगा? [मज़ी 7:21 पढ़ें।] स्वर्ग में *कौन* प्रवेश करेगा? [रिज़्त स्थान में ''पिता की इच्छा पर चलता'' भरें।] यीशु *किन्हें* आशीष देगा? [इब्रा. 5:9 पढ़ें।] यीशु अनन्त उद्धार *किन्हें* देगा? [रिज़्त स्थान में ''उसकी आज्ञा मानते'' भरें।]

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है? हमने सीखा है कि यदि हम सच्चाई की बात नहीं मानते जो यीशु के द्वारा पहुंची है (यूहन्ना 1:17), तो हमें अनन्तकाल तक दण्ड मिलेगा, परन्तु यदि हम उसकी आज्ञा मानते हैं तो हमें अनन्त उद्धार मिलेगा।

निष्कर्ष

यह पाठ बहुत ही महत्वपूर्ण है, ज़्योंकि इसमें हमने अध्ययन किया है कि आनन्दमयी अनन्त भविष्य पाने के लिए हम ज़्या कर सकते हैं ?

I. *पाप ज़्या है ?* पाप वह करना है जिसके सही होने के बारे में हमें संदेह है, व्यवस्था का उल्लंघन है, हर प्रकार का अधर्म और वह करने में असफल रहना जो हम जानते हैं कि सही है।

II. *ज़्या आप पापी हैं ?* हां। हम सब पापी हैं।

III. *पापी का और उद्धार पाए हुए का भविष्य ज़्या होगा ?* पापी व्यज़्ति नरक में दण्ड भोगेगा जहां यीशु और परमेश्वर की उपस्थिति नहीं है। उद्धार पाया हुआ व्यज़्ति स्वर्ग में सदा के लिए यीशु और परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द लेगा।

IV. *आपका भविष्य ज़्या करने या नहीं करने से तय होगा ?* आपका भविष्य इस बात से तय होगा कि आपने यीशु द्वारा पहुंचाई सच्चाई को माना है या नहीं।

ज़्या आप यीशु के साथ स्वर्ग में रहेंगे ? ज़्या आपका उद्धार हो गया है ? यदि आपका उद्धार नहीं हुआ, तो आपको उद्धार पाने के लिए ज़्या करना चाहिए ? प्रभु की आज्ञा मानकर सदा के लिए उसके साथ ज़्यों नहीं रहते ? यदि आप उसकी आज्ञा मानते हैं तो आपको लाभ ही होगा आपका किसी बात में नुज़्सान नहीं होगा। अभी उसकी आज्ञा ज़्यों नहीं मानते ? यदि आप यीशु की आज्ञा मानने की योजना बनाते हैं, तो उसकी आज्ञा मानने का समय अभी है। आज्ञा मानने के बाद, आप आश्वस्त हो सकते हैं कि यीशु आपके साथ रहेगा और आत्मा के द्वारा आपकी सहायता करेगा (इफि. 3:16) ताकि आप सदा तक उसके साथ रह सकें। ज़्या आप इस जीवन में यीशु के साथ हर रोज़ रहकर आनन्द लेना और इस जीवन के बाद सदा तक उसके साथ रहने का आनन्द नहीं लेना चाहेंगे ? आपको ज़्या लगता है कि आपको ज़्या निर्णय लेना चाहिए ? ज़्या आप अभी बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े जाने के लिए तैयार हैं ?

किसी दूसरे के स्वप्न के लिए किया गया बलिदान

अलब्रेट ड्यूरर ने पेंटर बनने का स्वप्न देखा था। उसके पास कोई धन नहीं था। न्युरज़्बर्ग, जर्मनी में जाकर वह एक बूढ़े आदमी के साथ रहने लगा, जो स्वयं भी निर्धन था। यह निर्णय लिया गया कि उनमें से एक काम करेगा और दूसरा पढ़ेगा। बूढ़े आदमी ने ज़िद की कि ड्यूरर स्कूल जाए और वह कठिन परिश्रम करेगा। बाद में उस बूढ़े आदमी ने देखा कि परिश्रम इतना कठिन था कि उसके हाथ खुदरे हो गए हैं और वह पेंट नहीं कर सकता। यह सब देखकर ड्यूरर को बड़ा दुख हुआ। एक दिन वह कमरे में गया तो उसने देखा कि उसका वह मित्र प्रार्थनापूर्वक अपने हाथ जोड़े हुए है। उसने उन जुड़े हुए हाथों की पेंटिंग बना दी। आज भी वे हाथ निस्वार्थ सेवा और अच्छे चरित्र का एक प्रतीक हैं।